प्रातः क्लास 17-3-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

ओमशान्ति। एक ही बेहद का बाप बैठ बेहद के बच्चों को समझाते हैं वा पढ़ाते हैं। बाकी मनुष्य जो कुछ पढ़ते हैं, सुनते हैं वह तुमको पढ़ना सुनना कुछ भी नहीं है क्योंकि यह तो समझ गये हो यह एक ही ईश्वरीय पढ़ाई है। बाकी सभी हैं आसुरी पढ़ाई। आसुरी पढ़ाई कैसे अथाह है। कितनी किताब है, कितने नाम, लिस्टें आद पड़ते हैं। वह कोई भी तुम्हारे काम के नहीं हैं। तुमको तो सिर्फ एक ईश्वर से ही पढ़ना है। बाप जो पढ़ावे, सिखावे औरतो पढ़ना है। वह तो अनेक प्रकार के किताब आद लिखते हैं जो सारी दुनिया पढ़ती है। कितने ढेर किताब छपते हैं। सिर्फ तुम बच्चे ही कहते हो सिर्फ एक से ही सुनूं सो फिर औरों को समझावें। क्योंकि उन से जो कुछ सुनेंगे उस में ही कल्याण है। बाकी तो ढेर के ढेर किताब हैं, नये2 निकलते हर रहते हैं। तुम समझते हो यह जो कुछ लिखते हैं सभी अनराईटियस। राईटियस सिर्फ एक बाप ही है। उन से ही सुनना है। बाप तुम बच्चों को समझाते बहुत थोड़ा हैं। इसको फिर डिटेल में समझा कर फिर एक ही बात आ जाते हैं। भल मन्मनाभव अक्षर बाबा रिपीट करते हैं, परन्तु बाबा ने ऐसे कहा नहीं हैं। बाप तो कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। और सृष्टि के आदि मध्य अन्त का जो ज्ञान सुनाता हूं वह धारण करो। यह भी तुम जानते हो जो देवता बनते हैं वही फिर बुधि को पाते रहेंगे। बच्चों को मूलवतन की भी याद है। फिर नई दुनिया की भी याद है। ऊंच ते ऊंच बाप फिर यहनई दुनिया। जिनमें ऊंच ते ऊंच यह ल०ना० राज्य करने वाले हैं। चित्र तो जरूर चाहिए ना। तो वह नाकी निशानी रह गई है। यह ही एक चित्र है। राम-सीता का भी भल है परन्तु उनको हेविन नहीं कहेंगे। वह है सेमी। अभी ऊंच ते ऊंच बाप तुमको पढ़ा रहे हैं। इस में किताब आद की कोई दरकार नहीं। यह किताब आद कुछ भी चलने का न है। जो दूसरे जन्म में पढ़ सके। यह यह पढ़ाई ऐसी है जो इसी जन्म के लिए ही है। यह अमरकथा भी है। नर से नारायण बनने की शिक्षा बाप ही देते हैं नई दुनिया के लिए। बच्चे 84 के चक्र को तो जान चूके हैं। यह पढ़ाई का समय है। बुधि में मथन होना चाहिए। तुमको फिर औरों को भी पढ़ाना है। सवेरे उठ कर बिचार सागर मथन करना है। रात को नहीं। जो समझाने वाले हैं उन्हीं का ही विचार सागर मथन होता होगा। विचार सागर मथन से टापिक्स, पाईन्टस आद निकलती है। भक्ति-मार्ग की बातें तो जन्म-जन्मांतर सुनी है। यह कोई जन्म-जन्मान्तर नहीं सुनेंगे। यह बात तो एक ही बार सुनाते हैं। बाप कहते हैं मैं एक ही बार आकर समझाता हूं। यह नालेज फिर तुमको भी भूल जाती है। भक्ति-मार्ग के कितने शास्त्र हैं। विलायत से भी बहुत किताब आते हैं। यह सभी खत्म हो जाने वाला है। शास्त्रों आद का नाम-निशान न रहेगा। यह सभी हैं कलियुगी सामग्री। यहां तुम जोकुछ देखते हो हास्पीटलें, जेलें, जज-मैजीस्ट्रेट आद वहां कुछ भी होते नहीं। वह दुनिया ही दूसरी है। दुनिया है ही एक पर नई और पुरानी दुनिया में फर्क तो जरूर होगा ना। उनको कहा जाता है स्वर्ग। वही दुनिया फिर नर्क बनती है। मुखसे कहते भी है फ्लाना स्वर्गवासी हुआ। सन्यासी कहेंगे ब्रहम में लीन हो गया। या निर्वाणधाम चला गया। परन्तु निर्वाणधाम में कोई जा नहीं सकते। कोई जानते ही नहीं। यह भी तुम जानते हो। रुद्र माला कैसे बनी हुई है। यह भी जानते हो रुण्ड माला भी है। विष्णु की राजधानी की माला बनती है ना। अभी माला के राज़ कोतुम बच्चे जान गये हो। रुद्र माला किसकी नाम है, रुण्ड माला किसका नाम है। नम्बरवार होइस ईश्वरीय पढ़ाई के अनुसार ही माला पिरोये जाते हैं। पहले2 तो यह निश्चय होता है ईश्वरीय पढ़ाई है। वह सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम शिक्षक भी है। रचना के आदि मध्य अन्त का नालेज जो बुधि में है वही फिर दूसरों को भी देनी है। आप समान बनाना है। बच्चों को विचार सागर मथन भी करना पड़े। टापिक्स तो बाबा बताते रहते हैं। जिससे मनुष्यों की बुधि में कुछ बैठे। कोई की बुधि में बैठता है। जैसे बाबा ने प्रश्नावली बनाई है, बाबा का खयालात चलता रहता है। जब तक छपा न है विचार सागर मथन चलता ही रहता है। सवेरे को अखबार भी सवेरे निकलती है। वह तो है कामन बात। यह तो विचार सागर मथन करना

होता है। एक्टैक पाईन्ट्स लाखों स्पर्यों का है। कोई अच्छी रीत समझते हैं कोई कम समझते हैं। समझने और स-
झाने की के अनुसार फिर नईदुनिया में पद मिलता है। इसमें विचार सागर मथन करने लिए बड़ी एकान्त चाहिए।
राम-तीर्थ के लिए बताते हैं वह जब लिखता था तो चेले को भी कहा दो माईल दूर चले जाओ। नहीं तो तुम्हारा
वायबरेशन आ जावेगा। डिफेक्टेड बुधि को को दूर रहना चाहिए। अभी तुम परफेक्टेड बुधि बन रहे हो। सारी दु
दुनिया ही है डिफेक्टेड बुधि। तुम इस पढ़ाई से दूसरे जन्म में फिर यह (ल०ना०) बनते हो। कितनी ऊंच
पढ़ाई है। परन्तु नम्बरवार बिठाये नहीं सकते हैं। पिछाड़ी को बिठानेसे पंक हो जावेंगे। और ही घूटका खाते
खाते2वायुमंडल को ही खराब कर देंगे। यूं तो ला करती है नम्बरवार बैठना चाहिए। परन्तु इन सभी बातों
को तो गुर जाने गूर की गोथरी जाने। यह है बहुत ऊंच नालेज। तुम्हारी अलग क्लास को कर नहीं सकते हैं।
वास्तव में बाबा ने समझाया था तुमको बैठना भी ऐसा चाहिए जो अंग अंग से न मिले। माईक अन्द पर तो
कितना भी दूर बैठ आवाज़ आद सुन सकते हैं। बड़े2 सभाओं में 20-30 हजार लोग भी बैठ सुनते हैं। यह तो
एक ही बाप की पढ़ाई है। बाप कहते हैं इस दुनिया में और कुछ न सुनो। न पढ़ो। तुम उन्हों का
संग भी न करो। मेहतरों से मनुष्य किनारा करते हैं ना। बाप ने समझाया है यह सभी मनुष्य मेहतर से भी
बदतर हैं। भार खाने वाले हैं। इन से तुमको किनारा करना है। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। बहुत ऐसे भी है
जो योग और नालेज को इतना समझते नहीं हैं। सिर्फ भार नहीं खाते। कबकब तो भार खाने वाले भी आ जाते
हैं। जिनको अजामिल कहो जो कुछ कहो। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं, संग भी उनका करना चाहिए। सुनना भी उन
से चाहिए। फिर ऐसे तो सभी कहेंगे हमको फर्स्ट ग्रेड ब्राह्मणी चाहिए। सेकण्ड ग्रेड, थर्ड ग्रेड तो हमको भी
सेकण्ड, थर्ड ग्रेड भी बना देंगी। इसलिए यह भी बता नहीं सकते हैं। फर्स्ट क्लास इतने सभी कहां से
आवेंगे। जैसे म्युज़ियम है, वहां तो बहुत तीखे समझो। योग युक्त समझाने वाला चाहिए। यह भी बाप समझाते
हैं ड्रामा बना हुआ है। कबकब बाबा कहते हैं ड्रामा में चेंज आ जावे। परन्तु चेंज हो नहीं सकती। यह तो
बनाया हुआ खेल है ना। बच्चों की अवस्थाओं को देखे ख़याल आता है यह तो कुछ चेंज हो जाये, क्या ऐसे ही
स्वर्ग में चलेंगे। फिर समझता हूं स्वर्ग में तो राजधानी भी है ना। कोई दास-दासियां कोई चण्डाल आद भी तो
होंगे ना। तो ड्रामा तो कुछ भी चेंज हो नहीं सकता है। भगवानुवाच यह ड्रामा बना हुआ है। उनको कुछ भी
मैं चेंज नहीं कर सकता हूं। भगवान के ऊपर तो कोई है भी नहीं। मनुष्य कहते हैं भगवान क्या नहीं कर
सकता। परन्तु भगवान खुद कहते है मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। यह तो बना बनाया खेल है। भगवान कहेंगे
ड्रामा में नूंध है मैं क्या कर सकता हूं। बहुत पुकारते हैं हे भगवान मुझे नंगन करते हैं, नंगन होने से बचाओ।
अभी बाप क्या करेंगे। बाप सिर्फ कह देते ड्रामा की भावी। भक्ति मार्ग में मनुष्य समझते हैं ईश्वर की भावी।
और ईश्वर कहते हैं ड्रामा की भावी। यह तो बना बनाया ड्रामा है ना। ऐसे मत समझो भगवन की भावी।
भगवान के हाथ में होता तो समझो कोई अन्यन्य शरीर छोड़ देते हैं उनको भी बचा लेते। ऐसे बहतों को
संशय आते हैं। भगवान पढ़ाते हैं, भगवान के बच्चे हैं। भगवान भी अभी बच्चों को बचा नहीं सकते हैं।
बहुत डोरापा देते हैं। कहते हैं ऐसे2 साधु लोग तो किसको प्राणों को बचा लेते हैं। प्राण फिर से आ जाते
हैं। ऐसे तो होता है चिक्षा से भी उठ आते हैं। फिर कहेंगे ईश्वर ने लौटा लिया। काल ले गया, उस पर प्रभु
प्रभु ने रहम किया। भल समझाते हैं ड्रामा में जो नूंध है वही होता है। कोई कुछ कर नहीं सकता। ममा
सरस्वती कितनी अच्छी थी। साक्षात लक्ष्मी बनने वाली उनको भी दुःख से बचा न सके। बाप कुछ भी कर नहीं
सकते। इसको कहा जाता है ड्रामा की भावी। ड्रामा का अक्षर तुम ही जानते हो। जो होना था सो हुआ। फिक्र
काहे का। तुमको भी बेफिक्र बनाते हैं। सेकण्ड व सेकण्ड जो कुछ होता है ड्रामा समझो। शरीर छोड़ कर जाये
दूसरा पार्ट बजाया। अनादी पार्ट को तुम कैसे फेर सकते हो। भल अभी थोड़ी कच्ची अवस्था है थोड़ा बहुत

आता है। बाबामिशाल देते हैं मम्मा की। उनको जाने का नहीं था। कहते थे पिछाड़ी में वह रहेंगी। यह बुढ़ा चला जावेगा। परन्तु मम्मा चली गई। भावी। कुछ कर नहीं सकते। और लोग भल क्या2भीकहे। परन्तु हमारे बुधि में ड्रामा का राज़ क्लिअर है। चक्र का भीमालूम है। पार्ट बजाना है फ्रि फिक्र की बात नहीं। जब तक कच्ची अवस्था है लहर थोड़ी आवेगी। बाबा कहते हैं यह भी कच्चा है। ड्रामा के प्लेन अनुसार तुम सभी पढ़ रहे हो। सभीदेहधारी हैं। एक मैं ही विदेही हूं। देहधारियों को बतलाता हूं यह भी कच्चा है। बाप बैठ समझाते हैं। कोई समय फिर यह भी वेहद में बैठ जाते हैं। वेहद में देखते हैं ना। बाप को याद करने बदली तुम बच्चों को वेहद में देखते हैं। मुझे बाप को याद करना है यह भूल जाता हूं। यह बाप का पार्ट और प्रजापिता ब्रह्मा का पार्ट बड़ा ही वन्डरफुल पार्ट है। कोई समय खुद ही सुनाता हूं। ऐसा करते2 सदैव बाबा न रहे मैं ही रह जाऊं। मैं ही सुनाता हूं। यह हो जावेगा तो पक्की याद हो जावेगी। जिसको ज्ञान मिला तो बाप के समान होशियार हो गया। वह अवस्था हो जावेगी तो वह फुल पास, कर्मातीत अवस्था हो जावेगी। फिर लड़ाई लग जावेगी। बाप महसुस करते हैं क्या अवस्था होगी। बाप को याद करते2 बाप बन गया। बाबा चला जावेगा। फिर खेल खलास। यह बाप बिचार सागर मथन करते हैं बच्चों को सुनाते भी रहते हैं। कितनी वन्डरफुल नालेज है। कितनी बुधि चलानी पड़ती है। बाबा का सुबह को बिचार सागर मथन होता है। समय तो बहुत है। अजन तो जैसे रेगाड़ियां पहनते रहते हैं। ऐसाबनना चाहिए जैसा हू बहू टीचर। फिर भी फर्क जरूर हरता है। टीचर स्टुडन्ट को कब 100मार्कस नहीं देंगे। कुछ जरूर कम देंगे। वह है ही ऊंच ते ऊंच। हम तो सभीदेहधारी हैं। तो हम बाप मिशल 100% थोड़े ही बन सकते हैं। वह बड़ी गुह्यबातें हैं। कोई2 तो सुन कर धारण करते हैं। खुश होते हैं। बहुत कहते हैं बाबा की तो एक ही वाणी है। कोई नई बात तो है नहीं। वही रिपीटेशन है। अभी कोई नये को ले आते हैं तोमुझे पहली पाईन्ट भी लेनी पड़ती है फिर कोई नई पाईन्टस भी निकल पड़ती है। मनुष्य तो ढेर हैं। औरों को समझाने लिए बच्चों को फिर भी बाप की मदद करनी पड़ती है। मैगज़ीन निकालते हैं, कल्प पहले भी ऐसे ही लिखते होंगे। अगर अखबार निकाले उन पर तो फिर बहुत अटेन्शन देना पड़े। ऐसी कोई बात न हो जो मनुष्य पढ़ कर नाराज़ हो जाये। मैगज़ीन तोतुम पढ़ते हो। कोई कच्ची-पक्की बात होगी कहेंगे अभी सम्पूर्ण थोड़े ही बने हैं। एक्यूरेट 16 कला सम्पूर्ण बनने में टाईम लगता है। अभी तो बहुत काम चाहिए। बहुत सर्विस करनी है। बहुत2 प्रजा बनानी है। यह भी बाप ने समझाया हैअनेक प्रकार के मार्कस हैं। कोई निमित बनते हैं बहुतों को ज्ञान लेने लिए प्रबन्ध करते हैं तो उनको भी मिलता है। अभी तो पुरानी दुनिया ही खत्म होनी है। यहां है अल्प काल का सुख। बिमारी आद तो सभीको होती है। साधु लोग भी कोई2तो जैसे मैड-चैप्स होते हैं। भक्त लोग समझते हैं सातवीं भूमिका है। यह विदेही है। बाबा तो इन बातों से अनुभवी है ना। दुनिया की वर्तें भी समझाते रहते हैं।

बाबा ने कहा था मैगज़ीन वा अखबार में वन्डरफुल बातें लिखो। जैसे अभी इन्द्रा गांधी के बच्चे की शादी हुई। तो तुम लिखो यह कोई नई बात नहीं। 5000वर्ष पहले भी इन्द्रागांधीकी शादी इसी लड़की लड़की के साथ हुई थी। शास्त्री मरा, 5000वर्ष पहले भी मरा था। तो मनुष्य वन्डर खावेंगे। और तुम से पूछेंगे यह कैसे लिखा है तुम ने। परन्तु ऐसा कोई समाचार आता नहीं है। यह बहुत ही वन्डरफुल बात है। जब कोई ऐसी बड़ी बात हो तो लिखना चाहिए जो समझे ब्र0 कु0 ने यह बात तो बिलकुल ठीक लिखीहै। यह लड़ाई भी 5000वर्ष पहले ऐसे ही हू बहू लगी थी। कैसे सो आओ तो हम क्लीयर कर समझावें। तो तुम्हारा नाम भी होगा। मनुष्य बहुत खुश हो जावेंगे। बहुत बड़ी बात है। परन्तु जब किसकी बुधि में बैठे। पढ़े लिखे आफिसर्स लोग की बुधि में तो भूसा भरा रहता है वह मुश्किल समझेंगे। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रित रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमोर्निंग आरनमस्ते